17 मार्च 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 24
मार्च (द्वितीय), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी के त्रिजन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में -

अष्टम् वार्षिकोत्सव सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 28 फरवरी से 1 मार्च तक आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी के त्रिजन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित अष्टम् वार्षिकोत्सव अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर दिनांक 28 फरवरी को प्रात: डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित श्री पंचास्तिकाय संग्रह महामण्डल विधान के उपरान्त उद्घाटन सभा हुई, तत्पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा 'भरत का अन्तर्द्वन्द' विषय पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

वार्षिकोत्सव का प्रारम्भ श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन परिवार 'पीतल फैक्ट्री' जयपुर द्वारा ध्वजारोहण करके किया गया। मण्डप उद्घाटन श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा एवं मंच उद्घाटन श्रीमती कविता-प्रकाशचंदजी छाबड़ा परिवार, सूरत ने किया। समारोह का उद्घाटन श्रीमती शशि धर्मपत्नी सुरेशजी जैन, शिवपुरी द्वारा किया गया। सभी अतिथियों का सम्मान श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका थे। मंचासीन अतिथियों में श्री संजयजी विदिशा आदि महानुभाव मंचासीन थे।

मंगलाचरण आयुष जैन पिपरिया ने एवं मंच संचालन ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

महोत्सव के आमंत्रणकर्ता श्री प्रेमचंद-सुनीता बजाज तन्मय-ध्याता बजाज परिवार, कोटा थे। श्री पंचास्तिकाय संग्रह महामंडल विधान के आमंत्रणकर्ता श्री महेन्द्रकुमारजी राहुल विनीत धार्मिक गंगवाल परिवार जयपुर, श्री सौरभजी जैन एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन मेरठ, श्रीमती कांता सेठी माताश्री शैलेन्द्रजी सेठी परिवार जयपुर, श्रीमती तरुणा-सचिन जैन, तन्दुल विशुद्धि जैन दिल्ली, श्री वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल टोडरमल स्मारक भवन थे।

महोत्सव में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल**, ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

श्री पंचास्तिकाय संग्रह महामंडल विधान के समस्त कार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री द्वारा टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों के सहयोग से संपन्न हुये।

दिनांक 27 व 28 फरवरी को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का विदाई एवं दीक्षांत समारोह; दिनांक 29 फरवरी को प्रात: परमागम ऑनर्स द्वारा 'प्रवचनसार' पर संगोष्ठी संपन्न हुई। दिनांक 28 व 29 फरवरी की दोपहर को टोडरमल महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों एवं स्नातक विद्वानों द्वारा '**पण्डित टोडरमल व्यक्तित्व कर्तृत्व**' विषय पर विशेष गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दिनांक 1 मार्च को प्रात:काल **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** के प्रवचन के उपरांत भव्य जिनेन्द्र रथयात्रा बापूनगर के प्रमुख मार्गों का भ्रमणकर पुन: स्मारक आयी, तत्पश्चात् सीमंधर जिनालय एवं पंचतीर्थ जिनालय में विराजमान सभी जिनबिम्बों के महामस्तकाभिषेक का मंगलमयी आयोजन किया गया। इसी प्रसंग पर सीमंधर जिनालय के शिखर पर नवीन ध्वजारोहण मोतीसन्स परिवार, जयपुर द्वारा किया गया।

मस्तकाभिषेक के अन्तर्गत श्री प्रदीपजी चौधरी परिवार किशनगढ, श्री संजयजी दीवान परिवार सूरत, श्री सुशीलकुमारजी गोदिका परिवार जयपुर, श्री महेन्द्रजी चौधरी भोपाल, श्री संजयजी कोठारी मुम्बई, श्री आगमजी जैन आई.पी.एस., श्री सर्वज्ञजी भारिल्ल आदि महानुभावों ने सर्वप्रथम मस्तकाभिषेक का लाभ प्राप्त किया।

रथयात्रा में आदिनाथ भगवान को रथ पर विराजमान करके लेकर चलने का सौभाग्य श्री संजयजी कोठारी मुम्बई एवं ध्वजा लेकर चलने का सौभाग्य श्री सुरेशजी जैन शिवपुरी को प्राप्त हुआ।

रथयात्रा के पश्चात् नवीनीकृत आचार्य कुन्दकुन्द सरस्वती पुस्तकालय का उद्घाटन **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** ने एवं स्वागत कक्ष का उद्घाटन **श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ** ने किया।

महोत्सव में सैंकड़ों साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया। ●

सम्पादकीय –

पुद्गल द्रव्य एवं वैज्ञानिक आविष्कार

4

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

पिछले अंक में हमने पुद्गलों की गमन शक्ति एवं वैज्ञानिक आविष्कारों की चर्चा की थी, अब आगे...

(गतांक से आगे...)

(3) पुद्गलों में सूक्ष्म परिणमन शक्ति और वैज्ञानिक आविष्कार–

पुद्गल परमाणुओं में ऐसी शक्ति है कि यदि वे सूक्ष्म रीति से परिणमन करें तो सूई की नोक जितने आकाश क्षेत्र पर अनंतानंत परमाणु समा सकते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि हाइड्रोजन के 25 लाख परमाणु एक सरल रेखा में रखें तो कुल लम्बाई मात्र एक इंच होती है। यह बात आज विज्ञान के आविष्कारों एवं प्रयोगों से प्रत्यक्ष सिद्ध है। एक ईंच की छोटी-सी पेन ड्राइव में सैंकडों प्रवचन, भजन एवं सैंकडों ग्रन्थों को संग्रहीत करके रखा जा सकता है। उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है। छोटी सी पेनड्राईव में, इतने कम स्पेस में इतना डाटा आ जाने पर हमें आश्चर्य लगता है; पर यह सब पुद्गलों की सूक्ष्म परिणमन शक्ति के स्वरूप में शामिल है।

आचार्य कुन्दकुन्दस्वामी क्षेत्र के सबसे छोटे अंश को 'प्रदेश' के रूप में परिभाषित करते हैं, तथा उस पर सम्पूर्ण लोक के समस्त परमाणुओं के अवस्थित होने की सामर्थ्य बताते हैं। उनका मूल कथन इसप्रकार है –

आगासमणुणिविट्ठं आगासपदेससण्णया भणिदं।
सव्वेसिं च अणूणं सक्कदि तं देदुमवगासं।।[33]

आकाश के जितने हिस्से में पुद्गल का एक परमाणु रहता है, उतने हिस्से को आकाशप्रदेश संज्ञा से कहा गया है और वह एक आकाश प्रदेश लोक के समस्त पुद्गल परमाणुओं को अवकाश देने में समर्थ है। कहने का अर्थ यह है कि एक प्रदेश पर अनन्तानन्त परमाणु अवगाहन प्राप्त कर सकते हैं। इसीप्रकार का भाव व्यक्त करते हुये आचार्य अकलंक देव लिखते हैं –

परमाण्वादयो हि सूक्ष्मभावेन परिणता एकैकस्मिन्नप्याकाशप्रदेशे अनन्तानन्ता अवतिष्ठन्ते।[34]

अर्थात् सूक्ष्मभाव से परिणत परमाणु एक-एक आकाश प्रदेश पर अनन्तानन्त अवस्थित हैं। पुद्गलों के सूक्ष्म परिणमन और आकाश की अवगाहन शक्ति से अनन्तानन्त पुद्गलों का अवगाहन आकाश के एक प्रदेश पर हो जाता है, इसमें कोई विरोध नहीं है। आचार्य नेमिचन्द्रस्वामी लिखते हैं – जितना आकाश (एक प्रदेश) अविभागी पुद्गल परमाणु से रोका जाता है, उसको सर्व परमाणुओं को स्थान देने में समर्थ प्रदेश जानो।[35]

इस विषय को आचार्यों ने चम्पा पुष्प की गन्ध के उदाहरण से समझाया है। जैसे चम्पा की कली में सूक्ष्म रूप से बहुत से गन्ध अवयव रहते हैं, पर जब वे फैलते हैं, विस्तरित होते हैं, स्थूल प्रचय परिणाम से बाहर निकलते हैं, तब सब दिशाओं को व्याप्त कर लेते हैं, ऐसा देखा जाता है।

हजारों वर्षों से आगमों में मौजूद पौद्गलिक शक्तियों के रहस्यों को पहिचान कर आज वैज्ञानिकों ने अनेक प्रयोग कर दिखाये हैं। जिनका हम डाटाकार्ड, पेनड्राईव आदि के रूप में अपने दैनिक जीवन में उपयोग कर रहे हैं। **(क्रमशः)**

33. प्रवचनसार, तत्त्वप्रदीपिका, गाथा-140
34. तत्त्वार्थवार्तिक, 5/10/वार्तिक-3 एवं सर्वार्थसिद्धि, 5/10 टीका
35. बृहद्द्रव्य संग्रह, गाथा-27

हार्दिक बधाई!

(1) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में प्रथम वर्ष में अध्ययनरत छात्रा **स्वस्ति जैन** पुत्री श्री संजयजी सेठी जयपुर को सत्र 2018-19 में उपाध्याय वरिष्ठ में 80.80% अंक प्राप्त करने पर दिनांक 25 फरवरी को बालिका शिक्षा फाउण्डेशन राजस्थान सरकार, जयपुर द्वारा "**बालिका प्रोत्साहन पुरस्कार**" दिया गया, जिसमें ट्रॉफी, प्रमाण-पत्र एवं 5 हजार रुपये की राशि प्रदान की गई।

(2) श्री राजकीय महाराज संस्कृत महाविद्यालय में दिनांक 4 मार्च को आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महा. के छात्रों ने निम्न उपलब्धियाँ प्राप्त की-

भाषण प्रतियोगिता में **आप्तअनुशील जैन** ने प्रथम एवं **अतिशय जैन** ने द्वितीय स्थान, कविता पाठ प्रतियोगिता में **संयम जैन गुढाचन्द्रजी** ने प्रथम एवं **अभिषेक जैन देवराहा** ने द्वितीय स्थान तथा गायन कला प्रतियोगिता में **संयम जैन दिल्ली** ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इस उपलब्धि हेतु टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

4 व 5 अप्रैल	दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट)	दीक्षान्त समारोह एवं उपकार दिवस
6 अप्रैल	दिल्ली	महावीर जयन्ती एवं उपकार दिवस
21 से 25 अप्रैल	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
26 अप्रैल	गजपंथा	गुरुदेव जयन्ती
17 मई से 3 जून	अहमदाबाद	प्रशिक्षण शिविर

अष्टाह्निका पर्व सानन्द संपन्न

मुम्बई : यहाँ जवेरी बाजार स्थित सीमंधर जिनालय में फाल्गुन माह की अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर सिद्धपरमेष्ठी विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रात: पण्डित टोडरमलजी के 300वें जन्मजयंती वर्ष के उपलक्ष्य में उनकी प्रथम रचना 'रहस्यपूर्ण चिट्ठी' पर एवं सायंकाल 'जैनदृष्टि में जगत का स्वरूप' विषय पर मार्मिक व रोचक प्रवचनों का लाभ मिला। इसी प्रसंग पर पाठशालाओं के बच्चों का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम भी रखा गया।

गौरझामर (म.प्र.) : यहाँ नया जैनमन्दिर में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 2 से 10 मार्च तक डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रात:काल ग्रन्थाधिराज समयसार पर, दोपहर में विभिन्न ग्रंथों के आधार से चरणानुयोग से स्वास्थ्य रक्षा प्रकरण पर एवं सायंकाल समयसार नाटक के निर्जरा अधिकार व प्रथमानुयोग की कथा पर आधारित अध्यात्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसी प्रसंग पर गौरझामर के पुराने मंदिर तथा केसली गांव में भी व्याख्यान हुये। **– संजय जैन बंटू, गौरझामर**

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ नवरंगपुरा में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 2 से 9 मार्च तक प्रतिदिन प्रात:काल देव–शास्त्र–गुरु पूजन का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अंकुरजी शास्त्री दूरदर्शन भोपाल द्वारा प्रतिदिन दोनों समय नियमसार एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में गुणस्थान विवेचन की कक्षा भी ली गई।

दिनांक 6 मार्च को नवरंगपुरा जिनमंदिर का 35वाँ स्थापना दिवस भी हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

अजमेर (राज.) : यहाँ वैशाली नगर स्थित श्री ऋषभायतन में श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 2 से 9 मार्च तक श्री वृहद् द्रव्य संग्रह विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अनुभवजी शास्त्री करेली मंगलार्थी द्वारा प्रात: द्रव्यसंग्रह एवं सायंकाल इष्टोपदेश पर प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी धवल ने संपन्न कराये।

– प्रकाश पाण्ड्या, अजमेर

विशेष कक्षाओं का आयोजन

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा दिनांक 17 फरवरी से 5 मार्च तक दोनों समय परीक्षामुख विषय पर कक्षाएं ली गईं। टोडरमल महाविद्यालय के उपाध्याय कनिष्ठ के विद्यार्थियों हेतु ये कक्षाएं अत्यंत लाभप्रद सिद्ध हुईं।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें– वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

अखिल बंसल को उम्मीद रत्न अवार्ड

उम्मीद हैल्पलाइन फाउन्डेशन जयपुर की ओर से भैरोसिंह शेखावत सभाभवन में आयोजित एक समारोह में जैन समाज के वरिष्ठ पत्रकार समन्वय वाणी (पाक्षिक) के सम्पादक श्री अखिलजी बंसल को नेशनल उम्मीद रत्न अवार्ड–2020 से सम्मानित किया गया।

यह अवार्ड जस्टिस एन.के. जैन (पूर्व अध्यक्ष–राज.राज्य मानवाधिकार आयोग), शशि शर्मा (फिल्म अभिनेत्री), श्री उत्तमचंदजी जैन (फाउन्डेशन अध्यक्ष) व श्री अनिल जैन (सदस्य–रेलवे बोर्ड) के करकमलों द्वारा प्रदान किया गया।

ज्ञातव्य है कि श्री अखिलजी बंसल पत्रकारों के महत्वपूर्ण संगठन अ.भा. जैन पत्र संपादक संघ के संस्थापक राष्ट्रीय महामंत्री के साथ अ.भा. दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के भी महामंत्री हैं। सामाजिक संगठन ''आशा'' के संचालक तथा अनेक संगठनों के पदाधिकारी हैं। आपकी 8 मौलिक कृतियाँ तथा 17 संपादित कृतियाँ हैं। इसके साथ ही आपकी अनेक कॉमिक्स भी लोकप्रिय हैं। दिनांक 3 अक्टूबर, 2009 को आप अ.भा. दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् द्वारा पण्डित कैलाशचंद शास्त्री पुरस्कार, दिनांक 30 अक्टूबर, 2011 को अहिंसा इन्टरनेशनल द्वारा पारसदास अनिलकुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार, दिनांक 26 मई, 2014 को माँ कौशलजी द्वारा ऋषभदेव पुरस्कार, दिनांक 19 दिसम्बर, 2014 को ए.वी.एस. फाउन्डेशन द्वारा वाग्मिता पुरस्कार तथा दिनांक 25 जून 2018 अ.भा. बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद् भोपाल द्वारा क्रांतिवीर मर्दनसिंह कृति के लिये राष्ट्रीय छत्रसाल पुरस्कार से सम्मान प्राप्त कर चुके हैं।

जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

मीना जैन को पीएच.डी. की उपाधि

उदयपुर (राज.) स्थित मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय की ओर से **मीना जैन** को जैनविद्या एवं प्राकृत विषय में पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गयी। मीना जैन ने **'तिलोयपण्णत्ति एवं जैन महापुराण में वर्णित तीर्थंकर का स्वरूप एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन'** विषय पर डॉ. ज्योतिबाबू जैन के निर्देशन में शोधकार्य संपन्न किया।

ज्ञातव्य है कि डॉ. मीना जैन अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सदस्य, 'अहिंसा संवाद' की संपादिका एवं 'आशा' की संगठन मंत्री जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करते हुए समाज सेवा में रत है।

जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

संगोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के त्रिजन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित आठवें वार्षिकोत्सव में दिनांक 28 फरवरी को दोपहर में आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी के व्यक्तित्व व कर्तृत्व पर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के वर्तमान छात्रों द्वारा संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने की। मुख्य अतिथि के अन्तर्गत पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं विशिष्ट अतिथियों में श्री शांतिलालजी भीलवाड़ा, पण्डित मनोजजी जैन मुजफ्फरनगर, श्री महावीरजी जैन मुम्बई उपस्थित थे।

संगोष्ठी में अंकुर जैन खड़ैरी ने वक्ता–श्रोता का लक्षण, पल त्रिवेदी गांधीनगर ने अरिहंतादि प्रयोजन सिद्धि से अकर्तृत्व सिद्धांत सिद्धि, अरिहंत जैन भिण्ड ने जैनेतर ग्रंथ आधारित जैनधर्म की प्राचीनता एवं श्रेष्ठता, समर्थ जैन विदिशा ने सुसंस्कृत जैनी प्रच्छन्न मिथ्यादृष्टि कैसे, मयंक जैन बण्डा ने क्या पुरुषार्थ से ही मोक्ष की प्राप्ति है, सम्मेद खोत हुपरी ने मोक्षमार्गप्रकाशक व छहढाला तुलनात्मक अध्ययन, अंकित जैन भगवां ने टोडरमलजी व समाधिमरण, विनय जैन मुम्बई ने महान आदर्श टोडरमलजी के जीवन से आदर्शमयी शिक्षाएं विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम का मंगलाचरण शिवराज स्वामी ने, संचालन सिद्धांत शेट्टी उगार व दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी ने एवं आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 29 फरवरी को इसी विषय पर दोपहर में टोडरमल महाविद्यालय के स्नातकों द्वारा संगोष्ठी संपन्न हुई, जिसके अध्यक्ष ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली एवं मुख्य अतिथि डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर और श्री सुरेशजी वकील ललितपुर थे।

संगोष्ठी में पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री ने अनुपम कृति रहस्यपूर्ण चिट्ठी, पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ का मूल प्रदेय – गृहीत अगृहीत मिथ्यात्व, डॉ. दीपकजी वैद्य जयपुर ने करणानुयोग के मार्मिक विद्वान पण्डित टोडरमलजी, डॉ. संजयजी शास्त्री दौसा ने हिन्दी गद्य साहित्य के विकास में पण्डित टोडरमलजी का योगदान और पण्डित टोडरमलजी पर शोध की संभावना, डॉ. अरुणजी बण्ड जयपुर ने मूल आम्नाय के संरक्षक पण्डित टोडरमलजी, पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर ने चार इच्छाओं के वर्णन में वैज्ञानिक पद्धति विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम का मंगलाचरण जिनेन्द्रजी शास्त्री ने एवं संचालन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

विदाई समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में आठवें वार्षिकोत्सव के पूर्व दिनांक 27 फरवरी को तीन सत्रों में श्री टोडरमल महाविद्यालय के तृतीयवर्ष के छात्रों को शास्त्री द्वितीयवर्ष ने भावभीनी विदाई दी।

सर्वप्रथम प्रात:काल देव–शास्त्र–गुरु पूजन व इन्द्रध्वज पूजन की गयी। तत्पश्चात् प्रथम सत्र प्रारम्भ हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने की। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने एवं तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। सभी सत्रों में शास्त्री तृतीयवर्ष के सभी विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए महाविद्यालय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्याध्ययन का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बताया; साथ ही सर्वांगीण विकास में संबद्ध महाविद्यालय में अपना स्वर्णिम युग व्यतीत हुआ बताया। स्वयं को सौभाग्यशाली बताते हुए महाविद्यालय से प्राप्त तत्त्वज्ञान को अपने जीवन में उतारने की भावना व्यक्त की तथा जीवनपर्यंत स्वाध्याय व तत्त्वप्रचार करने का संकल्प व्यक्त किया।

कार्यक्रम में अध्यक्षीय उद्बोधन के अतिरिक्त डॉ. संजीवजी गोधा, डॉ. दीपकजी वैद्य, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने भी अपने वक्तव्य से विद्यार्थियों को प्रेरणा दी। साथ ही राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय जयपुर से पधारीं हिन्दी अध्यापिका इन्द्राजी खत्री एवं संस्कृत अध्यापिका सीमा मेडम ने भी छात्रों को प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों में श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, सी.ए. शांतिलालजी गंगवाल, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित मनोजजी मुजफ्फरनगर, श्री के.सी. जैन, श्रीमती ममता गोदिका, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित नीशूजी शास्त्री, श्रीमंतजी नेज आदि महानुभाव मंचासीन थे।

तृतीय सत्र में पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने छात्रों को अपना विशेष उद्बोधन प्रदान किया। कार्यक्रम में अनेक विद्यार्थियों के परिवारजन भी उपस्थित थे।

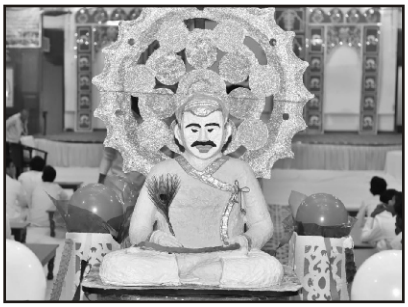

कार्यक्रम का मंगलाचरण आयुष जैन मडदेवरा ने, तीनों सत्रों का संचालन क्रमश: संभव जैन दिल्ली व शुभम जैन गढाकोटा ने, एकांश जैन खड़ैरी व अंकुर जैन खड़ैरी ने एवं पल त्रिवेदी गांधीनगर व प्रांजल जैन भोपाल ने तथा आभार प्रदर्शन आप्तअनुशील जैन दमोह ने किया।

ज्ञातव्य है कि यह वर्ष पण्डित टोडरमलजी के त्रिजन्मशताब्दी वर्ष के रूप में अत्यंत धूमधाम से मनाया जा रहा है, इसी उपलक्ष्य में शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों ने प्रवचन हॉल को पण्डित टोडरमलजी के समय के पुराने जयपुर की थीम पर तैयार किया, जिसमें उनकी मूर्ति भी बनायी गयी; विभिन्न चचाओं व नाटक के माध्यम से पण्डित टोडरमलजी के जीवन संबंधी अनेक जानकारी प्रदान की गई।

दीक्षान्त समारोह संपन्न

दिनांक 29 फरवरी की रात्रि में शास्त्री तृतीयवर्ष के छात्रों का दीक्षांत समारोह संपन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथियों में श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल, पण्डित अरुणजी शास्त्री बण्ड, श्री सुशीलजी गोदिका, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवजी गोधा, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. दीपकजी वैद्य, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, श्री ताराचंदजी सौगानी, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री संजयजी सेठी, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री,

पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल, श्री सुरेशजी वकील ललितपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित मनोजजी मुजफ्फरनगर, श्री संतोषजी, श्री संजयजी कोठारी, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, श्री जयकुमारजी बांरा, पण्डित संजयजी शास्त्री दौसा, श्री हीराचंदजी बैद जयपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया। तत्पश्चात् पण्डित गौरवजी शास्त्री ने पाँचों कक्षाओं के विद्यार्थियों का प्रान्तवार विवरण प्रस्तुत किया। साथ ही राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. भास्करजी शर्मा का शुभकामना संदेश वीडियो के माध्यम से दिखाया गया। टोडरमल महाविद्यालय का संक्षिप्त परिचय एवं इतिहास श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् श्री वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड के रजिस्ट्रार डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने छात्रों को उद्बोधन प्रदान किया एवं ट्रस्ट के महामंत्री डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को सिद्धान्त शास्त्री की उपाधि प्रदान करने हेतु निवेदन किया। डॉ. भारिल्ल ने **सिद्धांत शास्त्री** उपाधि की घोषणा करते हुए छात्रों को उपाधि की गौरव–गरिमा बनाये रखने की प्रेरणा दी। तत्पश्चात् अपने दीक्षान्त भाषण में उन्होंने इस अध्यात्म विद्या की महिमा, छात्रों का उसे प्राप्त करने के प्रति उत्साह एवं दीक्षान्त विषय पर विशेष प्रकाश डाला। शास्त्री तृतीयवर्ष के सभी छात्रों को उनके परिवारजनों के साथ मंच पर बुलाकर सिद्धांत शास्त्री की डिग्री एवं श्रीफल मंचासीन अतिथियों द्वारा प्रदान किया गया।

आदर्श पुरस्कारों के अन्तर्गत डॉ. हुकमचंद भारिल्ल कक्षा आदर्श विद्यार्थी पुरस्कार उपाध्याय कनिष्ठ से अविरल जैन खनियांधाना, उपाध्याय वरिष्ठ से अरविन्द जैन खड़ैरी, शास्त्री प्रथम वर्ष से पारस जैन भिण्ड, शास्त्री द्वितीय वर्ष से आप्तअनुशील जैन दमोह, शास्त्री तृतीय वर्ष से स्वप्निल जैन सिवनी ने प्राप्त किया। आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी सर्वादर्श पुरस्कार पल त्रिवेदी गांधीनगर ने, पण्डित बनारसीदासजी विशेषोन्नति पुरस्कार वैभव जैन ग्वालियर ने, आचार्य समन्तभद्र नवलेखन पुरस्कार अंकित जैन भगवां ने, आचार्य धरसेन श्रुताराधक पुरस्कार समर्थ जैन विदिशा ने, कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द आदर्श कक्षा पुरस्कार शास्त्री द्वितीय वर्ष ने प्राप्त किया।

अन्त में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने सभी छात्रों को शास्त्राभ्यास व सदाचार की प्रतिज्ञा दिलायी। सभी को जय–जवान कॉलोनी के महिला–मण्डल द्वारा उपहार भी वितरित किया गया।

कार्यक्रम का निर्देशन डॉ. शांतिकुमारजी पाटील एवं संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 28 फरवरी की रात्रि को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह (सत्र 2019–20) सानन्द संपन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथियों के अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री, डॉ. दीपकजी 'वैद्य', पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, श्री शान्तिलालजी भीलवाड़ा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित मनोजजी मुजफ्फरनगर, श्री सुरेशजी वकील ललितपुर, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री ताराचंदजी सौगानी, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, श्री अनेकान्तजी भारिल्ल, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल आदि महानुभाव मंचासीन थे।

सर्वप्रथम जिनेन्द्रजी शास्त्री ने मंगलाचरण किया, तत्पश्चात् सत्र 2019–20 में संपन्न हुए **17 सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं** के विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप नकद राशि, प्रमाण–पत्र व ट्रॉफी दी गई। इस कार्यक्रम का संचालन दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी व समर्थ जैन विदिशा ने किया। **खेलकूद की 19 प्रतियोगिताओं** के विजेता एवं उपविजेताओं को नकद राशि, प्रमाण–पत्र व ट्रॉफी दी गई। इस कार्यक्रम का संचालन नयन जैन खनियांधाना एवं जगदीशन जी. चेन्नई ने किया। इसके अतिरिक्त कुछ विशेष पुरस्कार भी दिये गये, जिसमें ब्र. यशपाल जैन उदीयमान खिलाड़ी पुरस्कार हर्षित जैन खनियांधाना को, पण्डित रतनचंद भारिल्ल उदीयमान साहित्यकार पुरस्कार राहुल जैन अमायन को, आचार्यकल्प पण्डित टोडरमल खेल रत्न पुरस्कार जगदीशन जी चेन्नई, आचार्य अमृतचन्द्र साहित्यरत्न पुरस्कार पवित्र जैन आगरा को, क्रिकेट में मैन ऑफ द सिरीज़ व बेस्ट बॉलर पुरस्कार मोहित जैन फुटेरा को प्रदान किया गया।

कंठपाठ योजना के अन्तर्गत अनेक छात्रों को कुल 27 हजार रुपये की पुरस्कार राशि प्रदान की गई। सत्र 2019–20 के परीक्षा परिणाम के अन्तर्गत शास्त्री प्रथम वर्ष से स्वानुभव जैन खनियांधाना व शाश्वत जैन भोपाल ने 95.75% अंक प्राप्तकर प्रथम स्थान एवं स्वस्ति जैन जयपुर ने 95% अंक प्राप्तकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। शास्त्री द्वितीय वर्ष से अर्पित जैन भगवां ने 94.6% अंक प्राप्तकर प्रथम स्थान एवं आप्तअनुशील जैन दमोह ने 94.2% अंक प्राप्तकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। शास्त्री तृतीय वर्ष से स्वप्निल जैन सिवनी ने 93.8% अंक प्राप्तकर प्रथम स्थान एवं अंकित जैन भगवां व अरिहंत जैन भिण्ड ने 92.6% अंक प्राप्तकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। समस्त शास्त्री वर्ग में 96% अंक प्राप्तकर शुभांशु जैन जबलपुर एवं संयम जैन दिल्ली ने विशिष्ट स्थान प्राप्त किया।

इस अवसर पर पुरस्कार के रूप में प्रथम स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को 2100/–, द्वितीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को 1500/– एवं विशिष्ट स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को 3100/– रुपये तथा प्रमाण–पत्र प्रदान किये गये।

समारोह में श्रीमती रूपवती किरण की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री नरेन्द्र जैन जबलपुर की ओर से परीक्षा परिणाम में स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को प्रतिवर्ष 10,000/– की राशि देने की घोषणा की गई।

कार्यक्रम का संचालन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

विकल्पजाल में उलझे मरणान्तक व्यक्ति को सम्बोधन (3)

जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण कैसा होना चाहिए?

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

इसी आलेख से –

– ''क्या कोई सराय (धर्मशाला या होटल) छोड़ते समय भी वहाँ की व्यवस्थाओं की चिन्ता करता है कि पानी कब आयेगा, सफाई कौन करेगा...''

–''...जब एक दिन मैं चला जाऊँगा तब भी तो यही लोग यह सब करेंगे ही न? तब क्यों नहीं आज से ही सही।''

–''...क्या मैं अपने स्वभाव में थोड़ा परिवर्तन करके इन अप्रिय प्रसंगों को टाल नहीं सकता हूँ...''

–''...यदि ये लोग इसी तरह जीना चाहते हैं तो मैं क्यों इसमें बाधक बनकर अपना ही सुखचैन खो दूं?''

–''सच तो यह है कि जगत का परिणमन तो स्वतंत्र है, यहाँ मेरे विकल्प से कुछ भी नहीं होता है, तब मैं क्यों व्यर्थ विकल्पों में उलझकर अपना उपयोग मलिन करूँ? मेरा मात्र ज्ञाता–दृष्टा रहना ही योग्य है।''

लगता है कि वह दिन (मृत्यु) जो इस जीवन में कभी तो आना ही था, अब समीप है। अब मेरा देहपरिवर्तन का समय हो गया है। मेरा मन अब भी क्यों यहीं पर उलझा हुआ है?

क्या कोई सराय (धर्मशाला या होटल) छोड़ते समय भी वहाँ की व्यवस्थाओं की चिन्ता करता है कि ''पानी कब आयेगा, सफाई कौन करेगा, अगला यात्री कब आयेगा आदि।

मेरे इस घर में और सराय में अब मेरे लिये फर्क ही क्या है? इस अनादि–अनन्त आत्मा के लिये ये मात्र 60–70 वर्ष क्या मायने रखते हैं? यह समय शान्ति और सुविधापूर्वक इस घर में कट गया पर अब तो इसका मोह छोड़कर आगे बढना ही होगा न!

अब मैं यहाँ से चला जाऊँगा तो न तो मैं इन लोगों को पहिचानूंगा और न ही ये लोग मुझे। हम सभी लोग एकदूसरे से अनंतकाल तक के लिए बिछुड़ जायेंगे। अपने अगले जीवन में कदाचित् संयोगवश मैं यहाँ आ भी पहुंचा तो यही मेरे ही द्वारा नियुक्त चौकीदार मुझे यहाँ घुसने तक नहीं देगा।

ऐसे में मेरा इनसे और इनका मुझसे क्या प्रयोजन है?

क्यों तो मैं इनसे द्वेष करूँ और क्यों राग करूँ? दोनों ही तो निष्फल हैं, क्या मेरे बिना यहाँ की व्यवस्थाएं चलेंगी नहीं?

सच तो यह है कि बहुत अच्छी तरह से चलेंगी, ***अब भी जब मैं कुछ दिनों के लिये बाहर चला जाता हूँ तो यहाँ क्या रुक जाता है, क्या लुट जाता है? सब कुछ तो व्यवस्थित रहता है, तब क्यों मैं व्यर्थ ही अपने समय और उपयोग को इन्हीं के विकल्प में बर्बाद करूँ।***

पहिले तो मुझे यह विकल्प भी सताता था कि यदि मैं यह सब नहीं करूँगा तो सब लोग क्या कहेंगे? क्या वे इसे मेरा असहयोग नहीं मानेंगे?

पर ***अब तो सभी चाहते हैं कि मैं उनके इन सब मामलों में दखल देना बंद कर दूं। अब तो वे मेरी दखलन्दाजी को मेरा असहयोग मानने लगे हैं।*** क्या यही मेरे हित में नहीं है? मेरा समय, श्रम और शक्ति बचे और इन सबको अनुकूलता महसूस हो।

अब ये सब्जी थोड़ी महंगी ले आये या कुछ सब्जी सड़–गलकर फिक जाये तो मैं कर भी क्या सकता हूँ, मैं भी यह सब कबतक कर पाऊँगा, **जब एक दिन मैं चला जाऊँगा तब भी तो यही लोग यह सब करेंगे ही न, तब क्यों नहीं आज से ही सही।**

यूं भी मेरे पास इतना सबकुछ है और मेरी आवश्यकताएं हैं, अत्यंत सीमित। जो कुछ भी बचेगा वह इन्हीं के पास तो रहेगा न!

मैं इन्हें सुखी और सन्तुष्ट ही तो देखना चाहता हूँ न? स्वयं मैं भी तो यही चाहता हूँ कि इन्हें अधिक से अधिक मिले ताकि उसका उपभोग करके ये सब लोग सुख से रहें, अब यदि इन्हें इसीप्रकार की कार्यप्रणाली से सुख मिलता है तो मैं क्यों रोकटोक करके इनके रंग में भंग करूँ?

यूं भी मेरे रोकने से क्या रुक जाता है, ये तो वही करते हैं जो इन्हें करना होता है, व्यर्थ ही मात्र वातावरण ही तो खराब होता है, तो ***क्या मैं अपने स्वभाव में थोड़ा परिवर्तन करके इन अप्रिय प्रसंगों को टाल नहीं सकता हूँ।***

क्या ये लोग नहीं जानते हैं कि मेरे इन प्रयासों से जो भी बचत होगी वह इन्हीं को मिलेगी, वह मेरे तो किसी काम आने वाली है नहीं, तब भी ***यदि ये लोग इसी तरह जीना चाहते हैं तो मैं क्यों इसमें बाधक बनकर अपना ही सुखचैन खो दूँ?***

इनके बचपन में मैं इन्हें कहानियाँ सुनाता था तो ये सभी बड़े प्रसन्न होते थे, हालांकि मेरे पास समय कम रहता था तो ये लोग कहानियाँ सुनाने के लिए चिरौरियाँ करते थे। अब आज हालात बदल गये हैं। आज यदि मैं इन्हें कुछ सुनाना चाहता हूँ तो ये सुनना ही नहीं चाहते हैं, ***पहिले मेरे पास सुनाने के लिए समय नहीं था आज इनके पास सुनने के लिए समय नहीं है।***

तब क्यों मैं जबरदस्ती कुछ न कुछ सुनाने का आग्रह पालूँ?

यदि ***मैं कुछ नहीं भी सुना पाया तो न तो इनका मोक्ष रुकने वाला है और न ही मेरा,*** तब क्यों नहीं मैं अपना सुनाने का लोभ संवरण करूँ, यही सभी के हित में भी है।

सच तो यह है कि जगत का परिणमन तो स्वतंत्र है, यहाँ मेरे विकल्प से कुछ भी नहीं होता है, तब मैं क्यों व्यर्थ विकल्पों में उलझकर अपना उपयोग मलिन करूँ? मेरा मात्र ज्ञाता–दृष्टा रहना ही योग्य है।

अस्तु।

विशेष सूचना

जैनपथप्रदर्शक का विशेषांक 'अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल' शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। यदि आपके पास उनसे संबंधित कोई महत्वपूर्ण फोटो हो तो हमें अवश्य उपलब्ध करावें।

उनका सरल/सहज जीवन किससे छिपा है? यदि उनके समागम/सान्निध्य के दौरान घटित कोई संस्मरण आपको ध्यान हो तो आप हमें अवगत करावें।

यदि आप लिख नहीं सकते तो हमें फोन पर बतायें, हम उसे भाषा देकर आपके नाम से ही प्रकाशित करेंगे।

यदि आपके पास जैनपथप्रदर्शक के पुराने (सन् 2000 के पूर्व) अंक हों तो वे भी भेजें।

आपके द्वारा भेजी गई सामग्री उपयोग में लेने के बाद सुरक्षित वापस भिजवा दी जायेगी।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर

मोबाइल - 9660668506

Email - ptstjaipur@yahoo.com

प्रवचनसार पर संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आठवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 29 फरवरी को प्रात:काल परमागम ऑनर्स की संगोष्ठी संपन्न हुई।

इस संगोष्ठी के अन्तर्गत डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई एवं विदुषी स्वानुभूति शास्त्री द्वारा अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी का मंगलाचरण श्री तुषारजी जैन ने एवं संचालन विदुषी स्वानुभूति शास्त्री मुम्बई ने किया।

पंचकल्याणक विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ तीर्थक्षेत्र चूलगिरि की तलहटी में स्थित राणाजी की नसिया में दिनांक 23 फरवरी को भगवान महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन श्री फूलचंदजी जैन परिवार (मुल्तानवाले) आदर्शनगर द्वारा किया गया। विधान के बीच में अनेक छंदों का व्याख्यात्मक अर्थ पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा बताया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित राजेशजी शास्त्री एवं पण्डित वीकेशजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये। **- अनिल जैन**

54वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 17 मई से बुधवार, 3 जून 2020 तक

कार्यक्रम स्थल :- चैतन्यधाम, अहमदाबाद-हिम्मतनगर नेशनल हाइवे-48, पोस्ट-धणप, जिला-गांधीनगर (गुज.)

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु
हार्दिक आमंत्रण है।

संपर्क सूत्र - ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)

फोन - 0141-2705581, 2707458; **Email - ptstjaipur@yahoo.com**

आवास प्रमुख - करण शास्त्री (9529194321), प्रतीक शास्त्री (9323778944)

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 13 मार्च 2020

प्रति,